पाठ-10

बिरसा मुण्डा

आइए, सीखें : ● देश प्रेम की भावना, नेतृत्व क्षमता का विकास ● अन्याय का विरोध करने का साहस ● संधि, समास ● प्रत्यय, उपसर्ग ● शुद्ध शब्द ● शब्दों का वाक्य प्रयोग

*(**पाठ परिचय :** सन् 1857 का प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम विदेशी दासता से मुक्त होने का एक महान प्रयास था। उस समय राजे-रजवाड़े ही नहीं, सामान्यजन भी अँग्रेजों के विरुद्ध कमर कसकर खड़े थे। इसका प्रभाव भारत की जनजातियों पर भी पड़ा। बिरसा मुण्डा के नेतृत्व में मुण्डा जनजाति ने अँग्रेजों का सशस्त्र विरोध किया था। प्रस्तुत पाठ उन्हीं वीर, क्रांतिकारी और मार्गदर्शक बिरसा मुण्डा का जीवन-वृत्त है।)*

स्वतंत्रता संग्राम की चिंगारी पूरे देश में भीतर-भीतर सुलग रही थी। 1857 में वह ज्वाला बनकर प्रकट हुई। भारत की जनजातियों में भी अँग्रेजी शासन के विरुद्ध भावनाएँ उमड़ने लगीं थीं। इन भावनाओं को स्वर देने का काम बिरसा मुण्डा ने किया था। बिरसा मुण्डा का जन्म छोटा नागपुर (वर्तमान झारखण्ड राज्य) के एक गाँव चारकाड़ में हुआ था। मुण्डा भारत की एक प्रमुख जनजाति है जो राँची और उसके आस-पास के क्षेत्रों में बहुसंख्या में निवास करती है। मुण्डा सरल जीवन यापन करने वाली प्रकृति पर निर्भर जनजाति है।

मुण्डा समाज के लोग 'सिंग' और 'बोंगा' की उपासना करते हैं। 'सिंग' का अर्थ सूर्य होता है और 'मुण्डा' समाज की देवी है। अन्य जनजातियों के समान मुण्डा समाज में भी आज काफी जागृति आ गई है। विदेशी दासता की जंजीरों से मुक्त होने के लिए तत्कालीन उरांव, मुण्डा और खड़िया जनजातियों ने बिरसा मुण्डा के नेतृत्व में अँग्रेजों के विरुद्ध हथियार उठा लिए थे।

अपने बचपन में बिरसा एक सामान्य बालक ही थे। वह अपने माता-पिता के काम में हाथ बँटाते, खेती-बाड़ी का काम करते तथा पशुओं को चराते। आर्थिक तंगी के कारण बिरसा को उनके पिता ने मामा के गाँव भेज दिया। बिरसा वहाँ अधिक समय तक नहीं टिके। उन्हें बंसी बजाने का शौक था। संगीत में वे इतने तन्मय हो जाते थे कि काम की सुध-बुध ही नहीं रहती। इससे उन्हें डाँट पड़ती। इस डाँट-फटकार से तंग आकर वे अपने माता-पिता के पास लौट आए।

शिक्षण-संकेत - ■ पाठ का आदर्श वाचन करें एवं बच्चों से कराएँ। ■ भारत की और मध्यप्रदेश की प्रमुख जनजातियों के बारे में बताएँ ■ कठिन शब्दों के अर्थ एवं पर्यायवाची शब्दों से वाक्य बनवाएँ ■ सन् 1857 के प्रमुख क्रांतिकारियों के बारे में बताएँ ■ मानचित्र में झारखण्ड राज्य और छोटा नागपुर आदि का क्षेत्र दिखाएँ।

उनके पिताजी ने उन्हें साल्गा गाँव की पाठशाला में भर्ती कर दिया, जहाँ से उन्होंने प्रारंभिक परीक्षा उत्तीर्ण की। फिर उन्हें चाईंबासा के लूथरन मिशन स्कूल में पढ़ने के लिए भेजा गया। मिशनरी स्कूल में पढ़ते समय बिरसा को दासता का अनुभव हुआ। उन्होंने मुण्डा जनों के शोषण के कई पीड़ादायी दृश्यों को देखा। बिरसा ने अँग्रेजों के कारनामों पर टीका-टिप्पणी करना प्रारंभ कर दिया। स्कूल प्रबंधकों को बिरसा का यह आचरण खटकने लगा। उन्होंने बिरसा पर बहुत दबाव डाला कि वह आलोचना करना बंद कर दे, किन्तु वे सत्य पर दृढ़ बने रहे। परिणामस्वरूप उन्हें विद्यालय से निष्कासित कर दिया गया। उनकी पढ़ाई छूट गई। इस समय वे युवावस्था में प्रवेश कर रहे थे। निष्कासन ने उनके जीवन की दिशा बदल दी। बिरसा मुण्डा पीड़ित लोगों की सेवा में जुट गए। वे बीमार व्यक्तियों का उपचार जड़ी-बूटी की सहायता से करने लगे। बीमार लोगों की भीड़ उनके यहाँ एकत्र होने लगी। उपचार के लिए वे दूसरे गाँवों में भी जाते थे। लोगों को विश्वास था कि बिरसा को कोई सिद्धि प्राप्त है। बिरसा के कारण ओझा लोगों का काम चौपट हो रहा था।

एक गाँव में जब चेचक फैली तो ओझाओं ने गाँववासियों से कहा, ''बिरसा के कारण ही यह बीमारी फैली है, उसे गाँव में मत घुसने दो।'' गाँववासियों ने वैसा ही किया। लेकिन बीमारी और भी भयानक हो गई, तब गाँववासियों ने बिरसा से प्रार्थना की। बिरसा ने गाँव में जाकर लोगों का जड़ी-बूटियों से उपचार किया और उन्हें स्वास्थ्य के नियम भी बताए। इसके बाद तो बिरसा ने चिकित्सा करने के साथ-साथ उपदेशक के रूप में भी कार्य करना प्रारंभ कर दिया। वे अवतारी पुरुष माने जाने लगे।

बिरसा लोगों से कहते, ''मुझे भगवान सिंग बोंगा ने प्रेरणा दी है कि मैं मुण्डाओं को फिरंगियों के अत्याचारों से मुक्त कराऊँ। अब मुण्डा लोग कम्पनी सरकार का हुक्म न मानें। पुलिस, मजिस्ट्रेट, मुंशी, जागीरदार किसी की बेगार न करें।''

बिरसा के प्रति लोगों का आदर-भाव उत्तरोत्तर बढ़ता जा रहा था। बिरसा के पास दूर-दूर के गाँवों से लोग आने लगे। उन दिनों जनजातियों की आर्थिक स्थिति बहुत दयनीय थी। इसके पूर्व वे अपनी जमीन के मालिक थे। वे फसलें उगाते थे। उनकी अपनी ग्राम-व्यवस्था

थी। पंच-पंचायतें थीं और रहन-सहन का अपना परम्परागत ढंग था। पर अँग्रेजों ने उन सबको नष्ट करके जमींदार, जागीरदार, जंगल के ठेकेदार और दलाल उन पर लाद दिए। वनवासी अपनी ही जमीन पर मालिक से नौकर हो गए। विवशता, भूख और दमन के कारण वे अपने आपको और असहाय समझने लगे।

ऐसी स्थिति में बिरसा मुण्डा ने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध तीव्र आंदोलन प्रारंभ किया। यह आंदोलन अन्याय और शोषण के विरुद्ध था। यह आंदोलन मानवता की रक्षा के लिए था। उन दिनों प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के महान् सेनानियों में झाँसी की रानी लक्ष्मी बाई, तात्या टोपे, नाना साहब, कुँवर सिंह आदि की वीरता की कहानियाँ लोगों के मुँह पर थीं। जनमत अँग्रेज शासकों के विरुद्ध था। मुण्डा समाज में दबी भावनाएँ अब व्यापक सामाजिक आंदोलन और राजनैतिक रूप में उभरने लगीं। गाँव इन गतिविधियों का केन्द्र था और बिरसा इन गतिविधियों के केन्द्र-बिन्दु थे। विदेशी राज का जुआ अपने कंधों से उतारने के लिए वे कृतसंकल्प थे। वे गाँव-गाँव में जाकर सभाएँ करते। एक सभा में उन्होंने कहा -

''अँग्रेज शासकों ने हमें बहुत लूटा है। हम अब और सहन नहीं करेंगे। हम शोषकों से मुकाबला करने के लिए कंधे-से-कंधा मिलाकर आगे बढ़ेंगे।'' बिरसा के विचारों से प्रेरित होकर मुण्डा व अन्य जनजातियाँ भाले और तीर-कमान लेकर चारकाड़ गाँव में एकत्र होने लगे। बिरसा की क्रांतिकारी गतिविधियों से परेशान डिप्टी कमिश्नर ने उन्हें उपस्थित होने का आदेश दिया किन्तु उस आदेश को ठुकरा दिया। तब उन्हें पकड़ने का उत्तरदायित्व जिला पुलिस अधीक्षक को सौंपा गया। उन्होंने रात में ही अपने दल-बल के साथ जाकर बिरसा को घर से गिरफ्तार कर लिया। उन्होंने कहा, ''मेरे न रहने पर भी मेरे द्वारा दिखाया गया रास्ता बन्द नहीं होगा।'' उन्हें ले जाकर राँची जेल में डाल दिया गया। न्यायालय ने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध दंगा भड़काने का आरोप लगाकर बिरसा और उनके कुछ साथियों को दो वर्ष की कठोर सजा सुनाई। सजा पूरी हो जाने पर सरकार ने उन्हें मुक्त कर दिया। साथ ही चेतावनी दी कि वे पूर्णत: शांति से जीवन यापन करेंगे। कुछ दिनों के बाद उन्होंने फिर ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध शंखनाद कर दिया जिसमें पूरा समाज उनके साथ था।

इस व्यापक सामाजिक जागरण को स्वतंत्रता-संग्राम की संज्ञा दी जाने लगी। ये खबरें इंग्लैंड तक जा पहुँची। बिरसा यहाँ-वहाँ बैठकें करते एवं लोगों को साहसपूर्वक अँग्रेज शासन का विरोध करने की बात करते। उनके साथ के लोग अँग्रेज अत्याचारियों पर बाणों की वर्षा करते। यह जंगल की लड़ाई थी। जनवरी 1900 के प्रारंभिक दिनों में अँग्रेजों के विरुद्ध मुण्डा समाज की यह लड़ाई पूरी तेजी पर थी। बिरसा के विरुद्ध वारंट निकल चुका था। लड़ाई लंबी खिंचती जा रही थी। अँग्रेजों ने पूरी ताकत लगाकर इस स्वाधीनता की लड़ाई को कुचलने की ठान ली। उन्होंने सेना बुलाकर सत्याग्रह को बर्बरता से दबाना प्रारंभ कर दिया; लोगों पर अंधाधुंध

गोलियों की बौछार होने लगी। सैकड़ों मुण्डा पकड़ लिए गए, कुछ ने आत्म-समर्पण कर दिया। इधर अँग्रेज सरकार ने बिरसा को पकड़ने के लिए एक बड़ा इनाम घोषित किया। उस इनाम के लालच में कुछ लोगों ने मिलकर सोते हुए बिरसा को जाकर पकड़ लिया। उन्हें डिप्टी कमिश्नर को सौंप दिया गया। इस प्रकार जन्मभूमि की स्वतंत्रता का बिरसा का लक्ष्य तो अधूरा रह गया, परंतु उन्होंने समाज में स्वाधीनता की चेतना की जो ज्योति जगा दी थी वह ज्योति निरंतर जलती रही।

बंदी होने से पहले बिरसा बीमार चल रहे थे। जेल में उनका स्वास्थ्य और गिरता जा रहा था। मुकदमे की सुनवाई के दिन जब उन्हें अदालत में पेश किया गया, तब वहाँ उनकी स्थिति बिगड़ गई। उन्हें खून की उल्टियाँ होने लगीं। मुण्डा समाज का यह महान उद्धारक सदा के लिए सो गया। सरकार ने उपद्रव के भय से उनका दाह-संस्कार सार्वजनिक रूप से नहीं किया।

बिरसा मुण्डा नहीं रहे। उनके कितने ही प्रियजन कारागार में चक्की पीसते रहे। उनके कितने ही साथियों को मौत की सज़ा दी गई। बिरसा मुण्डा समाज के लोक देवता बन गए। भारतीय स्वतंत्रता-संग्राम में उनका नाम अमर रहेगा।

- लेखकगण

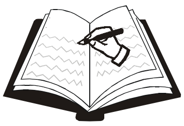

अभ्यास

बोध प्रश्न

प्रश्न 1. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ शब्दकोश से खोजकर लिखिए -

जीवन-वृत्त	--------------	उपासना	--------------
जागृति	--------------	तत्कालीन	--------------
उद्धारक	--------------	शोषण	--------------
चौपट होना	--------------	उपचार	--------------
कारागार	--------------	दासता	--------------
पथ	--------------	नाद	--------------
मुग्ध	--------------	सामान्य	--------------
प्रारंभिक	--------------	सदी	--------------
बियाबान	--------------	कथन	--------------
धूमिल	--------------	बर्बरता	--------------
पीड़ादायी	--------------		

प्रश्न 2 दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर लिखिए -

क बिरसा मुण्डा का संबंध निम्नलिखित में से वर्तमान के किस राज्य से था ?

(1) झारखण्ड (2) बिहार (3) छत्तीसगढ़

ख मुण्डा समाज के आराध्य देव 'सिंग' का अर्थ है

(1) सिंह (2) सींग (3) सूर्य

प्रश्न 3 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए -

क बिरसा मुण्डा को लूथरन मिशन स्कूल क्यों छोड़ना पड़ा ?

ख बिरसा रोगियों का उपचार कैसे करते थे ?

ग मुण्डा जनजाति के लोग बिरसा को क्यों मानते थे ?

घ अँग्रेजों ने बिरसा का दाह-संस्कार सार्वजनिक रूप से क्यों नहीं किया ?

ङ बिरसा मुण्डा ने किस उद्देश्य से अपना आंदोलन प्रारंभ किया था ?

प्रश्न 4 खाली स्थान भरिए -

क .... के कारण ओझा लोगों का काम चौपट हो रहा था।

ख मुण्डा लोगों के प्रमुख अस्त्र-शस्त्र .... और .... थे।

ग पुरस्कार के .... में कुछ लोगों ने बिरसा को पकड़वा दिया।

प्रश्न 5 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए -

क प्रस्तुत पाठ से हमें आज से सौ वर्ष पूर्व के आदिवासियों के जीवन की क्या जानकारी मिलती है?

ख बिरसा मुण्डा के आंदोलन के क्या कारण थे?

ग ''भारतीय इतिहास का एक सत्य यह भी है कि भारत जब भी विदेशियों से पराजित हुआ, तो देशद्रोहियों के कारण।'' प्रस्तुत पाठ के संदर्भ में इस कथन की पुष्टि कीजिए।

घ बिरसा मुण्डा ने किस उद्देश्य से अपना आंदोलन प्रारंभ किया था?

ङ	प्रस्तुत पाठ के आधार पर बिरसा मुण्डा के चरित्र की विशेषताएँ बताइए।

भाषा-अध्ययन

प्रश्न 1. निम्नलिखित शब्दों के मानक हिन्दी शब्द लिखिए -

हुक्म, जबान, सजा, इनाम, पेश, तबीयत

प्रश्न 2. निम्नलिखित शब्दों का समास विग्रह करके समास का नाम लिखिए -

जीवन-वृत्त, शैशवकाल, शंखनाद, टीका-टिप्पणी, जड़ी-बूटी, बहला-फुसला, गाँववासी।

प्रश्न 3. निम्नलिखित शब्दों का सन्धि-विच्छेद करके सन्धि का नाम बतलाइए -

तत्कालीन, उद्‌धारक, तन्मय, सत्याग्रह, युवावस्था।

प्रश्न 4. सही विकल्प चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

अ	'तन्मयता' शब्द में .... प्रत्यय है।

(यता, ता, मयता)

आ	'बेबस' शब्द में .... उपसर्ग है

(बेव, बे, स)

इ	'दयनीय' शब्द में .... प्रत्यय है।

(इय, नीय, य)

ई	'राजनैतिक' शब्द में .... प्रत्यय है।

(तिक, इक, क)

5. निम्नलिखित पर्यायवाची शब्दों में से जो शब्द सही पर्यायवाची नहीं हैं, उन्हें अलग करके लिखिए -

शब्द	**पर्यायवाची शब्द**	**गलत शब्द**
रास्ता	मार्ग, रथ, पगडंडी, पथ	------------
बच्चा	बाल, शिशु, काल, बालक	------------
पिता	जनक, पितृ, पितामह, तात	------------

सूर्य	रवि, शशि, भानु, दिनकर	------------
जेल	बंदीगृह, आवास, कारागार, कारागृह	------------

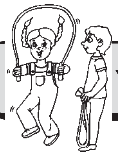

योग्यता विस्तार

1. स्वतंत्रता-संग्राम-सेनानियों की सूची बनाइए जो आपके जिले के अन्तर्गत आते हों और शिक्षक की सहायता से उनके बारे में जानकारी प्राप्त कीजिए।
2. स्वतंत्रता-संग्राम-सेनानियों से संबंधित पुस्तकें पुस्तकालय से प्राप्त कर पढ़िये।
3. मध्यप्रदेश में कौन-कौन सी जनजातियाँ रहती हैं? उनकी सूची बनाइए।